प्रतिभा

2021-2022

हिन्दी साहित्य सभा

VIRTUS IN ARDUO

संत अलॉयसियस महाविद्यालय
स्वशासी, जबलपुर (म.प्र.)

साहित्य सभा कार्यकारिणी

2021-2022

श्रेया पटेल (अध्यक्ष)

प्रबल राय (उपाध्यक्ष)

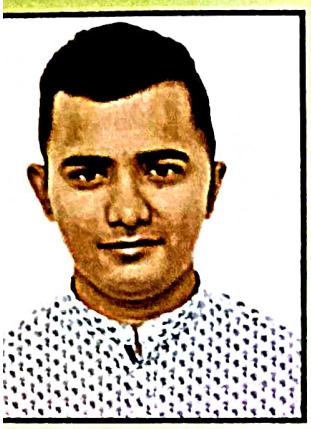

ऋषभ शर्मा (सचिव)

वंशिका जैन
(सह सचिव, संपादक)

रागिनी नापित
(कोषाध्यक्ष, संपादक)

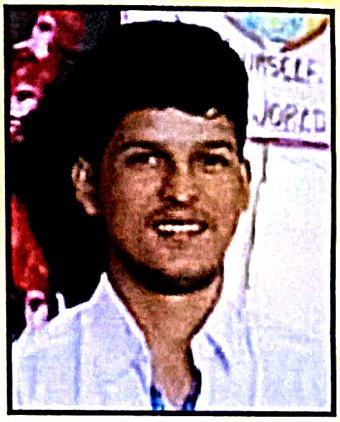

सुमित पाण्डेय
(कार्यकारिणी सदस्य)

नेहा कुशवाह
(कार्यकारिणी सदस्य)

अनुष्का मिश्रा
(कार्यकारिणी सदस्य)

गंगा चौकसे
(कार्यकारिणी सदस्य)

सृष्टि कुमारी
(कार्यकारिणी सदस्य)

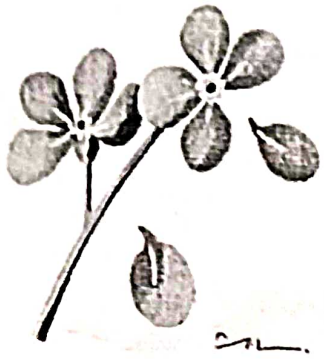

हिंदी साहित्य सभा

प्रतिमा

अंक–2021–2022

संरक्षक
डॉ. फा. वलन अरासू
प्राचार्य

संपादक
डॉ. रामेन्द्र प्रसाद ओझा
प्रभारी आचार्य

सहायक संपादक
डॉ. रीना थॉमस

छात्र संपादक

सुश्री रागिनी नापित
सुश्री वंशिका जैन

अनुक्रमनिका

क्र.	रचना	रचनाकार
1	संपादकीय	वंशिका जैन
2	साहित्य सभा गतिविधि	संकलित
3	ऑनलाइन शिक्षा कोविड–19 के दौर में रामबाण	कमलकांत सोनवानी
4	मैंने अभी हार कहाँ मानी है	रागिनी नापित
5	वृक्षारोपण	पूजा नेताम
6	मैं एक भटकता मुसाफिर	मनस्वी शरणागत
7	हिंदी एक नई पहचान	गंगा चौकसे
8	राह में मुश्किल होगी हजार	बलराम
9	मतदान का महत्व	सत्यम पटेल
10	बचपन	श्रेया पटेल
11	जैसी करनी वैसी भरनी	रोहिताश कुमार
12	तू है मेरा	गंगा चौकसे
13	क्या है समानता	नेहा कुशवाह
14	सूर्योदय	प्रबल राय
15	मित्र	श्रेया पटेल
16	बेटी बचाओ बेटी पढाओ	नेहा कुशवाह
17	कॉलेज जीवन	वंशिका जैन
18	नया सबेरा	प्रबल राय
19	लालच बुरी बला	अग्रेश गुप्ता
20	सफलता	शारदा पटेल
21	बचपन की यादें	शारदा पटेल
22	तर्क संगत	अग्रेश गुप्ता
23	वक्त नहीं	रागिनी नापित
24	श्री राम	मनस्वी शरणागत
25	हिंदी भाषा	अनुष्का मिश्रा
26	शीत ऋतु	अनुष्का मिश्रा
27	तू सबर कर	सत्यम महलोनिया
28	धरती की पुकार	मनस्वी शरणागत
29	भारत की गरीबी	साक्षी पटेल
30	क्या लिखूं	रागिनी नापित
31	ऑनलाइन शिक्षा कोविड–19 के दौर में रामबाण	सृष्टि कुमारी
32	गायन वादन तथा नृत्यम् त्रयम् संगीत मुच्युते	रागिनी नापित

संपादकीय

ईश्वर द्वारा मनुष्य को प्रदत्त वरदानों में सबसे प्रमुख प्रज्ञा और विवेक है. जो उसे धरती के अन्य जीवो से श्रेष्ठ और बेहतर बनाता है. इस अभिव्यक्ति की क्षमता का उसे सदैव सदुपयोग करना चाहिए और यह प्रयास करना चाहिए कि अपने विचारों के माध्यम से अपनी सोच के माध्यम से वह समाज को आगे बढ़ने में अपना योगदान दे सकें और एक अच्छा नागरिकए एक अच्छा इंसान एक अच्छा विचारक होने का परिचय दें.

इसी क्रम में विद्यार्थियों के द्वारा इस पत्रिका में लिखे गए आलेखए कविताएंए विभिन्न साहित्यिक रचनाएं समाज को दिशा देने में सहायक सिद्ध होंगी और इन के माध्यम से हमें भी यह संतुष्टि रहेगी कि हम समाज को कुछ बेहतर कर ले का प्रयास कर रहे हैं. इस पत्रिका में जितनी भी रचनाएं सम्मिलित वह सुंदर अभिव्यक्ति का प्रतीक है और भविष्य में हमारा प्रयास रहेगा कि हम विभिन्न सामाजिक मुद्दों को अपनी रचनाओं में शामिल कर समाज के लिए कुछ बेहतर कर सकें.

वंशिका जैन

बी. कॉम. द्वितीय वर्ष

हिन्दी साहित्य सभा

गतिविधि 2021 - 2022

हिंदी सप्ताह - हिंदी साहित्य सभा द्वारा दिनांक 7 सितंबर 2021 से 13 सितंबर 2021 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया. जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई - निबंध प्रतियोगिता, स्लोगन प्रतियोगिता, काव्य पाठ प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, लघु कथा प्रतियोगिता. जिसके परिणाम इस प्रकार हैं –

- **निबंध प्रतियोगिता**

  प्रथम – खेमवती परस्ते, बी.एड. तृतीय सेमेस्टर

  द्वितीय – मंजू यादव, बी.कॉम. तृतीय वर्ष

  तृतीय – खुशी नामदेव, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

- **स्लोगन प्रतियोगिता**

  प्रथम – दीपेश सोनी, बी.ए. तृतीय वर्ष

  द्वितीय – कमलकांत सोनवानी, बी.ए. तृतीय वर्ष

  तृतीय – अमानत सेम्युअल मिश्रा, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

- **काव्य पाठ प्रतियोगिता**

  प्रथम – मुस्कान हरदा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

  द्वितीय – अमानत सेम्युअल मिश्रा, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

  तृतीय – गौरव झारिया, बी.ए. तृतीय वर्ष

- **भाषण प्रतियोगिता**

  प्रथम – प्रवीण मिश्रा, बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

  द्वितीय – वंशिका जैन, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

  अंशुल सिंह परिहार, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

  तृतीय – गिरीश कुमार पाठक, एम.एस.सी. जूलॉजी, तृतीय सेमेस्टर

- **लघु कथा प्रतियोगिता**

  प्रथम – अमानत सेम्युअल मिश्रा, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस - विभाग द्वारा 10 जनवरी 2022 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस आयोजित किया गया. इसमें मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के उप-प्राचार्य डॉ. कलोल दास एवं मुख्य वक्ता के रूप में वह उप-परीक्षा नियंत्रक डॉ. विश्वास पटेल की उपस्थिति रही. कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ रामेंद्र प्रसाद ओझा ने की.

ऑनलाइन शिक्षा कोविड–19 के दौर में रामबाण

कमलकांत सोनवानी
बी.ए. तृतीय वर्ष

1. प्रस्तावनाः– इंटनेट उपकरणों का उपयोग करके विद्यार्थी और शिक्षक संवाद स्थापित करते हैं। ऑनलाइन शिक्षा को सरल भाषा में इंटरनेट आधारित शिक्षा व्यवस्था कहते हैं। आज एक क्लिक पर आपको सारी सूचनाऐं मिल जाती है। जैसे कि हम पारंपरिक रूप से गुरूकुल या कक्षा में जाते हैं और उनके शिक्षक के सामने बैठकर उनका ज्ञान प्राप्त करते हैं, लेकिन ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली में इसे शिक्षा का नवीनतम रूप माना जाता है।

2. ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली में कठिनाइयाँ और संभावनाएंः– ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली पर अमल इतनी जल्दी अधिक नहीं हो पाया जा सका है। ये अपनी आरंभिक चरण में है। महामारी के चलते शिक्षण संस्थानों और छात्रों को इसके अनुरूप ढालना एक चुनौती के समान है। इंटरनेट प्रणाली अभी तक कुछ छात्रों तक सीमित है, सब छात्र इसका लाभ नहीं उठा पाते हैं।

3. ऑनलाइन शिक्षा के फायदे व नुकसानः– ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली से छात्र घर में बैठे विदेश से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा से आप किसी भी विषय में या टॉपिक को समझ सकते हैं। अधिकतर छात्र आठ घंटे ऑनलाइन टाइम बिताते हें, जो कि मानसिक और शारीरिक स्थिति के लिए नुकसानदेह है। ऑनलाइन शिक्षा से सबसे बड़ा नुकसान यह है, कि माता–पिता बच्चों को मोबाइल, लेपटॉप जैसी सुविधा उपलब्ध करा देते है, लेकिन क्या बच्चे उनका सही उपयोग कर रहे हैं, इस बात से अनजान रहते हैं।

4. ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को सुधारने के उपायः– ऑनलाइन शिक्षक छात्रों से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते, लेकिन अगर शिक्षा पारंपरिक हो तो बच्चा उस विषय के बारे में बात कर सकता है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए सभी के पास मोबाइल होना चाहिए। आज के समय भी कई जगह नेटवर्क की समस्या है, हमें अच्छे नेटवर्क की व्यवस्था करनी पड़ेगी।

5. उपसंहारः– ऑनलाइन शिक्षा उन लोगों के लिए सुविधाजनक है, जो काम करते हुए या घर की देख–भाल करने के साथ अपनी पढ़ाई करना चाहते हैं। यह एक नयी शिक्षा प्रणाली है, जो हर देश अपना रहा है। छात्रों को जरूरत है, कि वह मन और ध्यान केंद्रित करके पढ़ाई करें। जो छात्र ऑनलाइन शिक्षा को ग्रहण करने में असमर्थ है, उनके लिए निःशुल्क ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था करने की जरूरत है।

.....

मैंने अभी हार कहाँ मानी है

रागिनी नापित
बी.ए. द्वितीय वर्ष

थोड़ा और निखर जाऊँ, ये बात मैंने ठानी है।
ऐ जिंदगी जरा रूक, मैंने अभी हार कहाँ मानी है।।

चलना है ऐसे पथ पर, जहाँ लिखनी सफल कहानी है।
ऐ जिंदगी जरा रूक, मैंने अभी हार कहाँ मानी है।।

माँ–बाप के आशीर्वाद की ये हवा सुहानी है।
ऐ जिंदगी जरा रूक, मैंने अभी हार कहाँ मानी है।।

आसमान में लिखनी सफल कहानी खुद की जुबानी है।
ऐ जिंदगी जरा रूक, मैंने अभी हार कहाँ मानी है।।

राह है तो मुश्किलें भी होंगी, राह सफलता की ओर रूझानी है।
ऐ जिंदगी ज़रा रूक, मैंने अभी हार कहाँ मानी है।।

चीर के बढ़ना है आगे, सामने आग हो या पानी है।
ऐ जिंदगी जरा रूक, मैंने अभी हार कहाँ मानी है।।

.....

वृक्षारोपण

पूजा नेताम
बी.ए. द्वितीय वर्ष

"धरती का श्रृंगार वृक्ष, वृक्षों से इसे सजाओ।

हरियाली से चमक उठे जग, दस–दस वृक्ष लगाओ।।"

भारतवर्ष का मौसम और जलवायु विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। पर्यटक इसकी प्राकृतिक रमणीयता यहाँ की मनोहारी प्राकृतिक सुषमा देखकर मोहित हो जाते हैं।

हमारे देश की प्राचीन संस्कृति में वृक्षों की पूजा और आराधना की जाती है तथा उन्हें देव की उपाधि दी जाती है। वृक्षों को प्रकृति ने मानव की मूल आवश्यकताओं से

जोड़ा है। किसी ने कहा है कि – वृक्ष ही जल है, जल ही अन्न है और अन्न ही जीवन है। वृक्ष की जड़ों के साथ वर्षा का अपार जल जमीन के भीतर पहुँचकर अक्षय भण्डार के रूप में एकत्र रहता है। वन हमारी सभ्यता और संस्कृति के रक्षक है। शान्ति और एकान्त की सोच में हमारे ऋषि–मुनि वनों में रहते हैं। जिसमें भावी राजा, दार्शनिक, पण्डित आदि शिक्षा ग्रहण करते थे। आयुर्वेद के अनुसार पेड़–पौधों की सहायता से मानव को स्वथ्य एवं दीर्घायु किया जा सकता है। नदियों का जल दूषित हो रहा है। वायुमण्डल में कार्बन डाइ–ऑक्साइड गैस की मात्रा बढ़ रही है। इससे भावी पीड़ा स्वास्थ्य को खतरा है। भारत सरकार ने 1950 में बन महोत्सव की योजना प्रारम्भ की । नये वृक्ष लगाये जाने लगे और वृक्षारोपण की योजना प्रारम्भ हुई।

वृक्षों के महत्व एवं गौरव को समझते हुए हमारी प्राचीन परम्परा में इनकी आराधना पर बल दिया गया। पीपल के वृक्ष की पूजा करना वृत रखकर उसकी परिक्रमा करना, जल अर्पण करना पुण्य है और पीपल को काटना पाप करने के समान है। यह धारणा वृक्षों की समाप्ति की रक्षा का भाव प्रकट करती है। प्रत्येक हिन्दू घर के आँगन में तुलसी का पौधा अवश्य पाया जाता है। तुलसी पत्र का सेवन प्रसाद में आवश्यकता माना जाता है। बेल के वृक्ष, फल, बेलपत्र की महिमा इतनी है कि वे शिवाजी पर चढ़ाये जाते हैं। वृक्षों की रक्षा करने हेतु हरे तृणों को काटना पाप है, जिससे वृक्षों को ईश्वर स्वरूप, वन क़ो सम्पदा और वृक्षों के काटने वालों की अपराधी कहा जाता है।

वृक्षों की अधिकता पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति को भी बढ़ाती है। मरूस्थल को रोकने के लिए वृक्षारोपण की महती आवश्यकता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ का जन–जीवन खेती पर निर्भर रहता है और खेती के लिए जल की आवश्यकता होती है। सिंचाई का उत्तम साधन बारिश का जल है। यदि वर्षा न हो तो नदी, जलाशय, झरने, ट्यूबवेल इत्यादि भी सूख जायें। जल की पूर्ति भी वर्षा करती है। वृक्ष वर्षा के पानी को सोखकर धरती के भीतर पहुँचा देते हैं। इसी से धरती उपजाऊ होती है।

वृक्षों से स्वास्थ्य लाभ होता है। मनुष्य की श्वाँस प्रक्रिया से जो दूषित हवा वाहर निकलती है, वृक्ष उन्हें ग्रहण कर हमें बदले में स्वच्छ हवा देते हैं। आँखों की थकान दूर करने तनाव से छुटकारा पाने के लिए वनों की हरियाली हमें शांति प्रदान कर आँखों की ज्योति को बढ़ाती है। वृक्ष बालक से लेकर बुजुर्गों तक सभी के मन को भाते हैं। हम अपने घरों में छोटे–छोटे पेड़ लगाते हैं। वृक्षों पर अनेक प्रकार के पक्षी अपना घोंसला बनाकर रहते हैं। उनकी कल–कल मधुर ध्वनि पर्यावरण में मधुरता घोलती है। वृक्ष इसकी छाल और जड़ों से दवाइयाँ बनती है। अनेक पशु वृक्षों से आहार ग्रहण करते हैं।

वृक्षों से हमें नैतिकता, परोपकार और विनम्रता की शिक्षा मिलती है। फल को स्वयं वृक्ष नहीं खाता। यह जितना अधिक फल–फूलों से लदा होगा उतना ही झुका हुआ रहता है। हम देखते हैं कि सूखा हुआ पेड़ भी कुछ दिनों में हरा–भरा हो जाता है जो जीवन में आशा का संचार धैर्य और साहस का भाव जगाता है। वृक्षारोपण करके ही हम अपनी भावी पीढ़ी के लिए जीवनदायी वातावरण सृजित कर सकते हैं।

.....

मै एक भटकता मुसाफिर

मनस्वी शरणागत
बी.एससी. तृतीय वर्ष

मैं अपनी राहों का एक भटकता मुसाफिर।
कहीं इस अनजाने पथ पर खो ना जाऊँ।।
अपनी राहों का हारा हुआ तो क्या हुआ।
क्या मैं अपने नैने से आँसुओं की पतझड़ बहाऊँ।

मैं एक निष्कपट हृदय का मुसाफिर।
उस कर्कश हृदय को समझते–समझते
अपने पथ पर खो ना जाऊँ।।

उल्लासों का दौर तो बहुत देखा है।
कहीं इस आँसुओं के दौर में भटक ना जाऊँ।।
मैं अपनी राहों का एक भटकता मुसाफिर।
इस अनजाने पथ पर खो ना जाऊँ।।

बहुत कुछ पाया है इस संसार से मैंने।
अपने अंतिम समय में मैं भी इस संसार को कुछ दे जाऊँ।।
अनजाने पथों की उलझन को क्यों ना मैं ही सुलझा जाऊँ।

मैं अपनी राहों का एक भटकता मुसाफिर।
कहीं इस अनजाने पथ पर खो ना जाऊँ।।

.....

हिन्दी : एक नई पहचान

गंगा चौकसे
बी.ए. प्रथम वर्ष

हिन्दी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिन्दी दिवस भारत में हर वर्ष 14 सितंबर की मनाया जाता है। हिन्दी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ–साथ हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा भी है। वह दुनियाभर में हमें सम्मान भी दिलाती है। यह भाषा है हमारे सम्मान स्वाभिमान और गर्व की । हम आपको बता दें कि हिन्दी भाषा विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है।

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

धीरे–धीरे हिन्दीभाषा का प्रचलन बढ़ा और इस भाषा राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद की जाती है, इसका एक कारण यह है कि हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिविंब है। विश्व के कोने–कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और

संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रूख कर रहे हैं। एक हिन्दुस्तानी को कम से कम अपनी भाषा यानी हिन्दी तो आनी ही चाहिए, साथ ही हमें हिन्दी का सम्मान करना भी सीखना होगा।

हिन्दी दिवस भारत में हर वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है। हिन्दी हिन्दुतान की भाषा है। राष्ट्रभाषा किसी भी देश की पहचान और गौरव होता है, हिन्दी हिन्दुस्तान को बांधती है। इसके प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। इसी कर्तव्य हेतु हम 14 सितंबर के दिन को हिन्दी दिवस के रूप में मानते हैं।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिन्दी भाषा की पहचान भी है कि इसे बोलने और समझने में किसी को कोई परेशानी नहीं होती। पहले के समय में अंग्रेजी का ज्यादा चलन नहीं हुआ करता था, तब यही भाषा भारतवासियों या भारत से बाहर रह रहे हर वर्ग के लिए सम्माननीय होती थी। लेकिन बदलते युग के साथ अंग्रेजी ने भारत की जमीन पर अपने पाँव गड़ा लिए हैं। जिस वजह से आज हमारी राष्ट्रभाषा को हमें एक दिन के नाम से मनाना पड़ रहा है। पहले जहां स्कूलों में अंग्रेजी का माध्यम ज्यादा नहीं होता था आज उनकी माँग बढ़ने के कारण देश के बड़े–बड़े स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे हिन्दी में पिछड़ रहे हैं। इतना ही नहीं, उन्हें ठीक से हिन्दी लिखना और, बोलना भी नहीं आती है। भारत में रहकर हिन्दी को महत्व न देना भी हमारी बहुत बड़ी भूल है।

आजकल दुनियाभर में हिन्दी जानने और बोलने वाले को अनपढ़ या एक गंवार के रूप में देखा जाता है। या यह कह सकते हैं कि हिन्दी बोलने वालों को लोग तुच्छ नजरिए से देखते हैं। यह कतई सही नहीं है। हम हमारे ही देश में अंग्रेजी के गुलाम बन बैठे हैं और हम ही अपनी हिन्दी भाषा को वह मान–सम्मान नहीं दे पा रहे हैं, जो भारत और देश की भाषा के प्रति हर देशवासियों के नजर में होना चाहिए। हम या आप जब भी किसी बड़े होटल, बिजनेस क्लास के लोगों के बीच खड़े होकर गर्व से अपनी मातृ भाषा का प्रयोग कर रहे होते हैं तो उनके दिमाग में आपकी छवि एक गंवार की बनती है।

आज हर माता–पिता अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के लिए अच्छे स्कूल में प्रवेश दिलाते हैं। इन स्कूलों में विदेशी भाषाओं पर तो बहुत ध्यान दिया जाता है लेकिन हिन्दी की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया जाता। लोगों को लगता है कि रोजगार के लिए इसमें कोई खास मौके नहीं मिलते। हिन्दी दिवस मनाने का अर्थ है गुम हो रही हिन्दी को बचाने के लिए एक प्रयास।

.....

राह में मुश्किल होगी हजार

बलराम
बी.ए. तृतीय वर्ष

राह में मुश्किल होगी हजार
तुम दो कदम बढ़ाओ तो सही,
हो जायेगा हर सपना साकार
तुम चलो तो सही, दो कदम बढ़ाओ तो सही।।

मुश्किल है पर इतना भी नहीं
कि तू कर ना सके
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं
कि तू पा न सके
तुम चलो तो सही तुम चलो तो सही

एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा
तुम्हारा भी सत्कार होगा
तुम कुछ लिखो तो सही
तुम कुछ आगे पढ़ो तो सही
तुम चलो तो सही।।

.....

मतदान का महत्व

सत्यम पटेल
बी.ए. प्रथम वर्ष

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। 26 जनवरी 1950 को भारत को लोकतांत्रिक देश घोषित किया गया था। लोकतांत्रिक देश में सभी नागरिकों को मतदान देने का अधिकार होता है, किन्तु कुछ नागरिक अपने कर्तव्य से पीछे हटते हैं ऐसे में हमें क्या करना चाहिए? मतदान हमारे लिए वहुत ही जरूरी है। यह केवल संस्कार की ही प्रगति नहीं करते हैं, वल्कि आम नागरिक की भी प्रगति इसके पीछे छिपी होती है। हमारे भारत में मतदान को भी एक उत्सव की तरह मनाया जाता है।

किसी भी आम नागरिक की सवसे बड़ी क्षमता यही होती है कि उसको मतदान देना चाहिए। उसको अपने प्रतिनिधित्व को चुनने का पूरा अधिकार है। हर किसी की सोच

विचार अलग होता है। इसी के चलते लोग अपनी गर्जी से प्रतिनिधित्व को चुन सकते हैं। हर नागरिक को अपने मन के विचार प्रकट करने चाहिए। यह केवल सरकार के लिए ही नहीं बल्कि अपनी भी प्रगति के लिए करना चाहिए। इससे उन्हें राजनीतिक दुनिया के बारे में भी पता चलता है।

जब भी आम जनता सरकार को चोट देना चाहती है, तो वह इस असमंजस में रहती है कि हमारे लिए कौन सा प्रतिनिधित्व सही है? कौन प्रतिनिधित्व हमारे देश में विकास कर सकता है या कौन सा भ्रष्टाचार हो सकता है। अगर आप भी इस विषय में असमंजस में पड़ जाते हैं, तो आपको चाहिए कि आप जाँच पड़ताल करें कि सबसे ज्यादा देश के प्रति अपने कर्तव्य कौन निभा रहा है। जो देश की सेवा को सर्वोपरि रखता है, वही सही प्रतिनिधित्व होता है।

अगर आम जनता के द्वारा सही से प्रतिनिधित्व नहीं चुना गया तो देश की बागडोर गलत हाथों में चली जाती है। इससे देश को खतरा भी हो सकता है क्योंकि कुछ ऐसे प्रतिनिधित्व होते हैं, जो सरकार बनाकर उसका गलत फायदा उठाते हैं और एक भ्रष्ट नेता के रूप में उभरते हैं। सबसे बड़ी बात तो यही है कि आम नागरिक मतदान देने में डरते हैं अगर वह अपने वोट को कीमती समझे तो सही प्रतिनिधि का चुनाव कर सकते हैं। अन्यथा भ्रष्ट नेता अपने ही लोगों को पैसे देकर चुनाव जीत जाते हैं और देश को नुकसान पहुँचाते हैं।

किसी भी देश यही चाहिए कि उसके देश के नागरिक ईमानदारी रहे। देश का नेता चुनने के लिए आम नागरिक को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। इसलिए आम नागरिक को अपने कर्तव्य को समझते हुए सही प्रतिनिधित्व को चुनना चाहिए। जिससे उनके देश को अच्छी सरकार मिल सके।

भारत में हर नागरिक को सबसे सर्वोपरि माना जाता है क्योंकि जो ताकत जनता के पास होती है वह ताकत सरकार के पास भी नहीं होती है। इसीलिए आम नागरिक को यह अंदाजा होना चाहिए कि मतदान कितना जरूरी है। गाँव हो या शहर हो हर नागरिक को जागरूक होना चाहिए। अपने मतदान के लिए अगर ऐसा नहीं करते है तो उनकी प्रगति में रूकावट आती है।

अगर हम सही प्रतिनिधित्व नहीं चुनेंगे तो देश की सरकार किसी गलत हाथों में चली जाएगी। इससे देश को भी नुकसान होगा और वहाँ रहने वाली जनता को भी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए अपने अधिकार के चलते हर नागरिक को अपनी सत्ता चुनने का अधिकार मिला हुआ है तो वह उसका पूर्णता लाभ उठाए।

जब प्रत्येक नागरिक 18 वर्ष की आयु पूरी कर लेता है, तब हमें मतदान देने का मौका मिलता है और यह मौका हमें पूरे जीवन मिलता है। लेकिन इस मौके का अवसर हमें हर 5 साल में उठाना चाहिए था जब भी चुनाव होता है। इस मौके का लाभ जरूर लेना चाहिए। यह बात भी आम जनता पर ही निर्भर करती है, क्योंकि हर 5 वर्ष में चुनाव

होता है। जिसके चलते आम नागरिक को अपनी सरकार का गठन करने का कर्तव्य होता है। आम जनता ही निर्धारित करती है कि राज्य और केंद्र सरकार पर कौन स्थापित होगा।

वोट देना हमारा हक है। इस हक का हमें फायदा उठाना चाहिए, क्योंकि भ्रष्ट नेता अपने ही लोगों से वोट गिरवाते हैं और चुनाव जीत जाते हैं। जिसके चलते देश को बहुत बड़ा नुकसान हो जाता है और यह साबित नहीं हो पाता है, कि कौन ईमानदार है और कौन भ्रष्ट नेता है।

मतदान देने की प्रक्रिया क्या होती है :–

- मतदान देने के लिए किसी से भी जोर जबरदस्ती नहीं की जाती है वह अपने पसंदीदा, ईमानदार को मत दे सकता है।
- अपने मत को हमेशा गुप्त रखें, किसी को भी यह नहीं बताए कि आप किसके समर्थन में हैं।
- सबकी मत की सहमति अलग–अलग होती है इसलिए जरूरी नहीं है कि वह एक समान ही सोचें।

हमारे देश की जितनी भी परेशानियाँ और समस्याऐं हैं, अगर सरकार चाहे तो उन समस्याओं को खत्म कर सकती है। परंतु अकेले सरकार के चाहने से कुछ नहीं होगा, इसमें आम जनता को पूर्ण सहयोग करना होगा। तभी हमारे देश की गरीबी, बेरोजगारी, दिन–प्रतिदिन बढ़ती महँगाई, इन सब को हम रोक पाऐंगे। क्योंकि वोट देने से देश में बहुत से परिवर्तन आ सकते हैं इसलिए आपको अपना अधिकार समझना चाहिए और अपने देश के प्रति जागरूक रहना चाहिए।

.....

बचपन

श्रेया पटेल
बी.कॉम.(टैक्स) द्वितीय वर्ष

एक बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था।

चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दिवाना था।।

खबर ना थी कुछ सुबह की,
न शाम का ठिकाना था।

थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था।।

माँ की कहानी थी,
परियों का फसाना था।

वारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था।।

हर खेल में साथी थे,
हर रिश्ता निभाना था।

गम की जुवान ना होती थी,
ना जख्मों का पैमाना था।।

रोने की वजह ना थी,
ना हँसने का वहाना था।
क्यों हो गये हम इतने वड़े
इससे अच्छा तो वो वचपन का जमाना था।।

.....

जैसी करनी वैसी भरनी

रोहिताश कुमार
वी.ए. तृतीय वर्ष

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके दो वेटे थे। एक का नाम राम और दूसरे का नाम श्याम था। किसान अपने वेटों से वहुत प्यार करता था है। उसका वड़ा सुखी परिवार था। जव किसान के वेटे वड़े हो गये तो उसने उनकी शादी कर दी। शादी के वाद दोनों की पत्नियाँ आपस में वहुत लड़ती थीं। किसान ने दोनों को समझाया परन्तु कुछ सुधार ना आया।

फिर किसान ने दोनों वेटों में संपत्ति का वंटवारा कर दिया और दोनों भाई अलग–अलग रहने लगे। वड़ा वेटा राम अपनी पत्नी और अपने वेटे को लेकर घर से चला गया और श्याम अपनी पत्नी तथा वूढ़े माँ–वाप से घर का सारा काम करवाते थे। राम को इस वात की कोई जानकारी नहीं थी। जव वूढ़े माँ–वाप श्याम के साथ थे। उनके अच्छे से व्यवहार नहीं किया जाता था। उन्हें सभी वुरा–भला खूव सुनाते थे। एक दिन उसकी माँ

बीमार पड़ गई और घर का काम नहीं कर पा रही थी तो श्याग ने अपने माँ बाप को घर से निकाल दिया। और यह सब श्याम के बेटे ने देखा और दूसरी तरफ राम को जब यह पता चला की श्याम माँ बाप को घर से निकाल दिया है तो राम अपने माँ बाप को अपने घर ले आया और उनकी खूब सेवा किया, उनकी देख रेख अच्छे से करता था और राम कि पत्नी उनका अच्छे से ख्याल रखती थी।

राम के घर पर उनके माँ बाप खूब अच्छे और खुशी से रहते थे। एक दिन राम के बेटे ने अपने पिता से कहा पिता जी जब आप बूढ़े हो जाओगे तो मैं आपको घर से नहीं निकालूंगा आपकी खूब सेवा करूंगा आपका अच्छे से ख्याल रखूँगा। और दूसरी तरफ श्याम का बेटा बोलता है कि आप बूढ़े हो जाओगे तो मैं आपको घर से बाहर निकाल दूँगा और आपसे घर का सारा काम कराऊँगा जैसे आप अपने पिता के साथ करते थे मैं वैसा ही व्यवहार आपके साथ करूँगा।

.....

तू है मेरा

गंगा चौकसे
बी.ए. प्रथम वर्ष

ऐ मालिक तू है मेरा, ऐ ईश्वर तू है मेरा
मेरी सासों में है तेरा नाम
मेरी यादों में है तेरा नाम
मेरे जिन्दगी के सफर में तू है मेरा
मेरे जिन्दगी के सफर में तू है मेरा
जब आत्मा तेरी, जब शरीर तेरा,
तो ऐ भगवान में क्यों न हूँ भक्ति तेरा

मेरे अपने कौन है?

मेरे अपने कौन है'? क्या वे जो
थोड़ी देर साथ चलने के बाद साथ छोड़ देंगे,
या फिर वे जो मेरे विश्वास को तोड़ते हैं
या फिर वे जो मेरी झूठी कसमें खाते हैं
आखिर कौन है? मेरे अपने कौन हैं?

.....

क्या है समानता

नेहा कुशवाहा
वी.ए. प्रथम वर्ष

"ईश्वर ने भी असमानता कम और
समानता ज्यादा दिया है,
फिर इंसान ने क्यों इतनी,
असमानता फैला दिया है।"

लिंग भेदभाव तब होता है जब पुरूष और महिला के वीच अनुचित अधिकार होते हैं। यह उनकी लिंग भूमिका के कारण भिन्न होता है जो अंततः जीवन में असमान व्यवहार की ओर ले जाता है। लिंग भेद कई सदियों से चला आ रहा है। हालॉकि जैसे–जैसे हम विकसित हो रहे हैं यह समय है कि लैंगिक भूमिकाओं की ऐसी धारणाओं को दूर किया जाए, लैंगिक भेदभाव मिटाया जाए। जब प्रकृति ने जन्म से किसी को लड़का तो किसी को लड़की या फिर थर्ड जेंडर बनाया है तो इसमें उन व्यक्तियों का क्या दोष है? जिसे आज हमारा पुरूष प्रधान समाज स्वीकार नहीं कर रहा है।

पति–पत्नी एक रथ के दो पहिए के समान हैं परंतु क्या ऐसा सचमुच होता है? नहीं क्योंकि हमारा समाज पुरूष प्रधान समाज है प्राचीन काल से ही स्त्रियों को दबाया गया है, उन्हें मजबूर किया गया कि वह घर की चारदीवारी में ही रहे क्योंकि वह उनका कर्तव्य है, क्योंकि वे महिलाएँ है और महिलाओं का काम सिर्फ अपने परिवार को संभालना, घर का काम करना, पति की सेवा और ध्यान रखना, बच्चों को पैदा करके उनका पालन–पोषण करना ही उनका कर्त्तव्य है। उनके मन में ये बातें इस कदर बैठा दी गई हैं कि जब उन्हें कुछ कर दिखाने का मौका मिले तो कुछ ने तो पहले ही आगे आने से मना कर दिया। परंतु कुछ महिलाओं ने तो ऐसे काम कर दिखाए कि उनकी तुलना पुरूषों से तो होती ही है परंतु उनका नाम पुरूषों से भी ज्यादा आदर के साथ लिया जाता है। जैसे–झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई जी एक योद्धा के रूप में सबके सामने आईं और अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए और जिस जमीन पर आज हम हैं वह रानी दुर्गावती की जमीन है, जिन्होंने युद्ध में लड़ते–लड़ते अपना बलिदान दे दिया परन्तु हार नहीं मानी।

हिन्दू धर्म के अनुसार स्त्री को सबसे ऊपर रखा गया है क्योंकि एक स्त्री खुद तकलीफ सहकर वंश को आगे बढ़ाती है इसलिए हिन्दू देवियों (माताओं) की पूजा होती है। परन्तु विडंबना तो देखिये एक तरफ स्त्री को माता कह कर हम उनकी नवरात्रि में नौ दिनों तक पूजा करते हैं और दूसरी तरफ उनके साथ कैसा व्यवहार (निर्भया केस दिल्ली) करते हैं? कितने शर्म की बात है जो पुरूष एक स्त्री की कोख से पैदा होता है वह किसी और स्त्री के साथ दुष्कर्म करता है परंतु समाज में उस पुरूष को कोई कुछ नहीं कहता है और उस स्त्री की आवाज यह कहकर दवा दी जाती है कि इससे तेरी और तेरे परिवार की बेइज्जती होगी। मामला वहीं खत्म हो जाता है एवं लोगों के मन में पता नहीं ये बातें कहाँ से बैठ गई हैं कि अगर लड़का होगा तो वह परिवार का नाम रोशन करेगा, घर को

आगे ले जाएगा इसी गलतफहमी की वजह से ना जाने कितनी स्त्रियों का गर्भपात करा दिया जाता है और उनसे माँ बनने का सुख छीन लिया जाता है इन्हीं सब समस्या को भारत सरकार ने दूर करने के लिए कुछ योजनाएँ भी बनाई हैं जैसे "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', आज बेटियों ने हर क्षेत्र में अपना पूर्ण योगदान दिया है और दे रही है जिसकी वजह से सफलता उनके कदम चूम रही है जैसे – पीवी सिंधु (बैडमिटंन प्लेयर) इंदिरा गाँधी (भारत की प्रथम महिला प्रधान मंत्री) मेरी कॉम (बाकिसम), जय ललिता (एक्टर एवं पॉलिटीसियन) आदि।

वर्तमान समय में लिंग भेद की सबसे बड़ी समस्या यह है कि आज भी बहुत सारे लोग पढ़े–लिखे नहीं हैं और वह कुछ पुरानी परंपराओं को लेकर चले आ रहे हैं। जिनकी वजह से व्यक्ति सही निर्णय नहीं ले पाते और न चाहते हुए भी भेदभाव कर देते हैं। दूसरी समस्या यह है कि आज भी हमारे समाज में बहुत सारी महिलाएँ अपने पिता या पति पर आर्थिक रूप से निर्भर हैं जिसकी वजह से उन्हें हर समय भेदभाव का सामना करना पड़ता है। अगर वे कुछ कहती भी हैं तो उनको पीटा जाता है या फिर उन्हें घर से निकाल दिया जाता है। कई बार तो उनके साथ अनुचित काम भी होते हैं परंतु वह कुछ नहीं कहती। पुरूष प्रधान समाज होने की वजह से हर। क्षेत्र में पुरूषों का दबदबा ही रहता है जिसकी वजह से महिलाऐं अपनी बात नहीं रख पाती है। और अगर अपनी बात रखती भी हैं तो कोई सुनता ही नहीं जिसकी वजह से वे पीछे रह जाती हैं उदाहरण – आज भी लोकसभा में 90 प्रतिशत पुरूष और सिर्फ 10 प्रतिशत महिलाएँ। जबकि यह आंकड़ा 50–50 का होना चाहिए था।

लिंग भेदभाव का समग्र रूप से समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है यह न केवल समाज के एक विशिष्ट वर्ग को बल्कि उसके हर हिस्से को प्रभावित करता है क्योंकि कम उम्र से ही लिंग भेदभाव का शिकार हो जाते हैं। आगे यह युग लोगों को प्रभावित करता है क्योंकि यह उनके व्यवहार, स्थिरता, पसंद, महत्वाकक्षाओं, दृष्टिकोण, और बहुत कुछ को प्रभावित करता है अंततः यह समय आ गया है कि लैंगिक भूमिकाओं की धारणाओं और भेदभाव को दूर किया जाना चाहिए।

.....

सूर्योदय

प्रबल राय
बी.ए. द्वितीय वर्ष

प्रातः काल शुरू होने की, शुरू हो चुका ब्रम्ह समय
नीले नभ पर हो रहा है अति मनोहर सूर्योदय,

स्वर्ण के जैसी रवि की किरणें चकाचौंध आँखों को करती,
दूर तलक फैली हैं, जगों पूर्ण अँधेरा हरती

और अभी घट रही कालिमा, आती ही जा रही लालिमा,
दिनकर के खिल जाने से, जाग रही है सारी दुनिया

फैली हुई है मधुर शांति, वातावरण है आनंदमय
नीले नभ पर हो रहा है अति मनोहर सूर्योदय।

.....

मित्र

श्रेया पटेल
बी.कॉम. (टैक्स) द्वितीय वर्ष

क्या आपके पास ऐसा मित्र है, जो जीवन को जटिलता से सरलता की ओर ले जाने में सहायक हो?

एक बार सूरज नाम का एक लड़का अपने अध्यापक के पास गया और पूछा "सर, एक व्यक्ति को जीवन में कितने मित्रों की आवश्यकता होती है – सिर्फ एक या बहुत सारे"।

अध्यापक ने उत्तर दिया "यह तो बहुत सरल सवाल हैं। यह तो तुम खुद ही जान जाओगे। आओ मेरे साथ"।

फिर अध्यापक छात्र को पास के बाग में ले गए। वहाँ उन्होंने एक सेब के पेड़ की ओर इशारा करते हुए सूरज से कहा, "तुम्हें तुम्हारा जवाब मिल जाएगा, लेकिन उससे पहले, क्या तुम मुझे उस पेड़ की सबसे ऊँची शाखा से एक सेब लाकर दे सकते हो?

सूरज ने पेड़ की ओर देखा और चेहरे पर स्पष्ट निराशा के साथ कहा, "सर, मैं दिल से आपके लिए एक सेब लाना चाहता हूँ, लेकिन उस सेब तक पहुँचना मेरे लिए बहुत कठिन है।"

"तो तुम अपने दोस्तों से मदद क्यों नहीं माँग लेते "

अध्यापक ने हल्का सा सुझाव देते हुए कहा।

सूरज उत्साह के साथ दौड़कर अपने दोस्तों के पास गया। वह अपने एक दोस्त के पास पहुँचा और उससे मदद माँगी।

अब दोनों दोस्तों ने एक–एक कर एक–दूसरे के कंधों पर खड़े होने की कोशिश की लेकिन फिर भी वे पेड़ की सबसे ऊपरी शाखा तक नहीं पहुँच सके।

जल्द ही, दोनों थक कर निराश हो गए। सूरज ने अपने अध्यापक की ओर देखा और कहा, "सर, मैं अभी भी उस शाखा तक नहीं पहुँच पाया हूँ। अब मुझे क्या करना चाहिए?"

अध्यापाक ने उत्तर दिया, बेटा, क्या तुम्हारे और मित्र नहीं है?"

एक नए जोश के साथ, सूरज उठा और अपने अन्य मित्रों को अपने साथ लाने के लिये चला गया।

पेड़ की उस ऊँची शाखा तक पहुँचने के अपने प्रयास में, सभी मित्र एक दूसरे के कंधों और पीठ पर खड़े होकर, विभिन्न प्रकार की मानव आकृतियाँ बनाने लगे।

लेकिन अफसोस! कोई भी उपाय काम नहीं आ रहा था। वह शाखा इतनी ऊँची थी कि उनके द्वारा बनाया गया "मानव पिरामिड" भी ढह गया।

सभी थक गए और अब वे पेड़ की उस शाखा तक पहुँचने की सभी उम्मीदें खो चुके थे। यह देखकर, अध्यापक ने सूरज को वापस बुलाया और पूछा, "तो सूरज क्या तुम्हें अपना उत्तर मिल गया? क्या अब तुम समझ गए कि एक व्यक्ति को कितने मित्रों की जरूरत होती है?"

सूरज ने उत्तर दिया "जी सर। एक व्यक्ति के बहुत सारे मित्र होने चाहिए ताकि वे एक साथ मिलकर किसी भी समस्या को हल करने का प्रयास कर सके।"

अध्यापक ने अस्वीकृति में सिर हिलाया। चेहरे पर मुस्कान के साथ उन्होंने कहा, "बेशक, आपके बहुत सारे मित्र होने चाहिए, ताकि उन सभी में से, कम से कम एक तो इतना होशियार हो जो सीढ़ी लाने के बारे में सोच सके।"

सारांशः– "मनुष्य की पहचान उसकी संगत से होती है। वह अपने आस–पास के लोगों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित होता है। इसलिए हमें उन लोगों की संगति करनी चाहिए जो हमें अपनी सीमाओं के पार जाकर पहले से बेहतर बनने के लिए प्रेरित करें।"

.....

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

नेहा कुशवाहा
बी.ए. प्रथम वर्ष

मैं भी लेती साँस हूँ, पत्थर नहीं इंसान हूँ,
कोमल मन है मेरा, वही भोला सा है चेहरा,
जज्बातों में जीती हूँ बेटा नहीं, पर बेटी हूँ।

कैसे दामन छुड़ा लिया, जीवन से पहले ही मिटा दिया,
तुझ से ही बनी हूँ, बस प्यार की भूखी हूँ,
जीवन पार लगा दूँगी अपनाओ, मै बेटा भी बन जाऊँगी,
हर लड़ाई जीत कर दिखाऊँगी, मैं अग्नि में भी जलकर जी जाऊँगी।
चंद लोगों की सुन ली तुमने, मेरी पुकार ना सुनी,
मैं बोझ नहीं भविष्य हूँ,
बेटा नहीं, पर बेटी हूँ।।

.....

कॉलेज जीवन

वंशिका जैन
बी.कॉम. (टैक्स) द्वितीय वर्ष

कॉलेज जीवन किसी के जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव है और यह हमारे व्यक्तित्व और भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कॉलेज जीवन हमें हर दिन नए अनुभव देता है। जिसमें हम विभिन्न चीजों के बारे में जानते हैं जो पहले हमें नहीं पता थीं। कई छात्र कड़ी मेहनत करते हैं और अपने कॉलेज के दिनों में जितना संभव हो उतना आनंद लेते हैं। वे कॉलेज जीवन के दौरान एक अलग शैली और दृष्टिकोण रखते हैं, हालांकि उनमें से कई अपनी पढ़ाई और भावी जीवन के बारे में अधिक गंभीर हैं।

एक कॉलेज किसी भी छात्र जीवन में एक नई शुरूआत है। स्कूल के बहुत अनुशासित जीवन के बाद कॉलेज आता है। यह हमें स्वतंत्रता के साथ–साथ जिम्मेदारी की भावना प्रदान करता है। हम अचानक यह सोचना शुरू कर देते हैं कि हम वास्तव में बड़े हो चुके हैं और अब हम कुछ भी कर सकते हैं। हम एक स्वतंत्र पंक्षी की तरह महसूस करते हैं।

जब पहली बार कॉलेज जाते हैं तो चारों ओर अंजान चेहरे ही दिखाई पड़ते हैं। लेकिन वो अंजान चेहरे कब दिल में अपनी जगह बना लेते हैं पता ही नहीं लगता। कॉलेज के दोस्त एक परिवार की तरह बन जाते हैं जो घर–परिवार की कमी पूरी कर देते हैं। लेकिन समय के साथ सब बदल जाता है। कॉलेज पूरा होने के बाद सभी अपने–अपने कैरियर में लग जाते हैं और कॉलेज के दोस्तों को याद करने का भी समय नहीं मिल पाता।

अक्सर 11वीं–12वीं में पढ़ने वाले छात्र–छात्राएँ अपने स्कूल के दिनों में ही आने वाले कॉलेज के 3–4 वर्षों के बारे में कई किस्म के सपने संजो लेते हैं। यह भी हकीकत है कि हमारे देश में टेलीविज़न और इंटरनेट में कॉलेज लाइफ देखकर कॉलेज जाने से पहले ही हरेक छात्र मौज–मस्ती, आजादी के बारे में बहुत ज्यादा आशाएँ रखकर मनचाहे सपने संजो लेता है। जैसे दोस्तों के साथ सैर–सपाटे, कुछ भी करने की आजादी और कॉलेज पार्टीज।

परंतु यदि आज का समय देखा जाए तो वास्तव में कॉलेज जीवन एक स्वप्न बन चुका है। पूरे देश में वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के चलते लॉक–डाउन रहा। सभी स्कूल कॉलेज बंद रहे। सरकार एवं शिक्षकों के प्रयास से किसी भी छात्र की शिक्षा रूकी नहीं। ऑनलाईन क्लास के जरिए हमें शिक्षा प्राप्त हुई। हम अगर अपने कॉलेज जीवन की बात करें तो विगत दो वर्षों से लॉक डाउन के कारण हमने घर बैठे ही ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त की। जिसके कारण ना हम अपने शिक्षक से मिल पाये, न हम नए दोस्त बना पाये, हम नए अनुभवों से वंचित रह गए।

कोरोना महामारी ने दो साल से पूरी दुनिया को परेशान कर रखा है। सभी यह कामना कर रहे हैं, जल्द से जल्द महामारी के इस दौर का अंत हो। देश में 99 प्रतिशत युवाओं का टीकाकरण हो चुका है, जिससे हमारी जिंदगी समान होने की उम्मीद और बढ़ गई है। आशा करते हैं कि जल्द से जल्द सब पहले जैसा हो जाए। जिससे हम अपना कॉलेज जीवन हर्ष और उल्लास के साथ व्यतीत कर सकें। कॉलेज जीवन की कुछ यादें बना पाये।

कॉलेज एक परिवार होता है जहाँ

हर दिन रविवार होता है।

हर दिल में बहुत प्यार होता है,

और आखरी दिन बड़ा ही बेकार होता है।

.....

नया सबेरा

प्रबल राय
बी.ए. द्वितीय वर्ष

सूर्योदय की घड़ी हुई है,
फिर भी कालिमा अड़ी हुई है,
पर अब नव अंकुर फूटेंगे
हाँ अब अब अंकुर फूटेंगे।

किसमें है सामर्थ भी इतना
जो इस नव अंकुर को रोके
सारे जग में छा जाएगा।
प्रखर उजाला अंकित होके।

नये सबेरे में पंछी भी
गाएँगे अब गीत नए
सागर के पानी में भी अब
नई उमंग की लहर बहे।

नया सबेरा, नई घड़ी है
थोड़ी कलिमा अड़ी हुई है (अभी भी)
पर अब नव अंकुर फूटेंगे
हाँ अब नव अंकुर फूटेंगे।

.....

लालच बुरी बला

अग्रेश गुप्ता
बी.ए. तृतीय वर्ष

जंगल में गर्मी के मौसम में एक शेर अपने गुफा से निकला क्यूंकि उसको बहुत भूख लगी हुई थी। उसको सामने एक खरगोश दिखा और उसने कुछ हिचकिचाहट के साथ सोचा "इससे मेरा पेट नहीं भरेगा"।

इसी बीच शेर को थोड़ी दूर में भागता हुआ एक हिरन दिखाई दिया। हिरन को देखते ही शेर का दिल गदगद हो गया और भागा। आहट पाते ही हिरन तुरंत घने जंगल में गायब हो गया। इसी बीच खरगोश भी वहां से भाग चुका था। वापस आ के खरगोश को वहां ना पा कर शेर ने अफसोस किया।

कहानी से सीखः– जितना अपने पास में हो उससे संतुष्ट होना चाहिए दूर की चीजों के पीछे भागने से अपनी चीजें भी खो जाती है।

.....

सफलता

शारदा पटेल
बी.ए. तृतीय वर्ष

यूं ही नहीं मिलती कामयाबी की मंजिल,
अपने ख्वाबों और जज़्बातों को
एक तरफ रखना पड़ता है।
नाकामयाबी में क्या कहेंगे लोग
ये भी सर में रखकर चलना पड़ता है।
पर रख हिम्मत तूफानों से टकराने की,
जरूरत नहीं हैं किसी मुसीबत से घबराने की।
काँटों से भरी इस जिंदगी में वक्त को मलहम बना लो,
कोई अपना ना दिखे तो अपनी परछाई को अपना बना लो।।

बचपन की यादें

जब जाती हूँ बचपन की रंगीन दुनिया में,
हर मोड़ याद आ जाते हैं पल–भर में।
हम में और बस हमारे सपने,
उस छोटी सी दुनिया के ये हम शहजादे।
अपना सा था वह अपना गांव
बारिश की बूंदें और कागज की नाव।
अगर बयां करूं मैं अपनी अनमोल बातों को
यूं ही गुजार दूं कई रातों को।

खाओ, पियो और घूमो वह वक्त था हमारा,
कितना प्यारा था बचपन हमारा।।

.....

तर्क संगत

अग्रेश गुप्ता
बी.ए. तृतीय वर्ष

चल ख्वाब देखते हैं .....

फिर एक नया साल आ गया, नई कथा है।

जो जिन्दगी जीने का ख्वाब है वो जी लिया, तो नया है।

बंदिशों को तोड़ कर पंख फैला ले परिंदे, तो नया है।

जो आरजू ले कर जी रहा है दिल में उसकी कोशिशों में लग जा, तो नया है।

इन हसरतों को लेकर एक दिन इस दुनिया से चला जाएगा .....

फिर एक नया साल आ जाऐगा, नया क्या है।

.....

वक्त नहीं

रागिनी नापित
बी.ए. द्वितीय वर्ष

हर खुशी है लोगों के दामन में।
पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं।।
दिन–रात दौड़ती दुनिया में।
जिंदगी के लिए वक्त नहीं।।

माँ की लोरी का एहसास तो है,
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं।
सारे रिश्तों को तो हम मार चुके,

अब उन्हें दफनाने का वक्त नहीं।।

सारे नाम मोबाइल में है,
पर दोस्तों के लिए वक्त नहीं।
आँखों में हैं नींद भरी,
पर सोने के लिए वक्त नहीं।।

पैसे की दौड़ में ऐसे दौड़े,
कि थकने का भी वक्त नहीं।
पराये एहसासों की क्या कद्र करें,
जब अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं।

तू ही बता ऐ जिंदगी,
इस जिंदगी का क्या होगा ?
कि हर पल मरने वालों को जीने के लिए वक्त नहीं।

.....

श्री राम

मनस्वी शरणागत
बी.एससी. तृतीय वर्ष

वक्त पे वक्त का, तुम नाम लो।
वक्त पे राम का, तुम नाम लो।
अब सब कुछ तुम्हारे बस में ही है।
जानकी के राम का, तुम नाम लो।

अब राम ही तुम्हारे इस दुनिया में।
राम के नाम का तुम नाम लो।
सबरी के झूठे बेरों में प्रेम है छुपा।
प्रेम से राम का तुम नाम लो।

धर्म की खोज में देखो वो निकल पड़े।
राजपाठ त्याग कर राम वन चले।

धर्म तो बहुत है लेकिन कर्म सिर्फ राम है।
राम खुद ही चलते–फिरते तीर्थ और शाम है।

मर्यादा है मन में भक्ति का कल्याण है।
प्रभु है जग के वो जानकी के प्राण है।

धर्म पे चला सदा, अधर्म की ना बात की।
गले लगे केवट के परवाह न की जात की।

राम तो बहुत है लेकिन, राम जैसा कौन है।
राम के आगे तो मर्यादा भी मौन है।

सारी प्रजा का दोष अकेले ही सह गए।
राजा से वो लेकिल सन्यासी बनकर रह गए।

.....

'हिन्दी भाषा'

अनुष्का मिश्रा
बी.ए. प्रथम वर्ष

कहाँ गई अपनी वह भाषा,
कहाँ हमारा देश है?
भूल गये क्या भारतवासी,
बापू का यह देश है।
आज हमारी संस्कृति पर,
पश्चिम का रंग छाया है।
छोड़ कर अपनी हिन्दी भाषा,
अंग्रेजी को अपनाया है।
खान–पान व्यवहार सभी कुछ
अपना नहीं पराया है।
चारों तरफ पश्चिमी सभ्यता ने,
अपना रंग जमाया है।
फिर से जगाओ आत्म–गौरव,
जो भारत की शान है।
हिन्दी हमारी राष्ट्रीय की भाषा,
यही अपनी पहचान है।

.....

'शीत ऋतु'

अनुष्का मिश्रा
बी.ए. प्रथम वर्ष

शीत ऋतु की ठिठुरती सुबह में,
सूरज मामा भी अलसाते
देर से उठते सुस्त हो जाते
ऊष्मा अपनी देर से लाते।
सूरज दिन भर प्यारे लगते
हमें सबके मन को है भाते
धूप में बैठे धमाचौकड़ी
करते बच्चों को हैं भाते।

तू सबर कर

सत्यम महलोनिया
बी.ए. तृतीय वर्ष

मैं जानकर अंजान हूँ,
जो नहीं लिखा वो ज्ञान हूँ,
दोस्तों का मैं मान हूँ
करता हूँ मैं मेहनत
फिर भी परेशान हूँ।

लेकर अपने सपनों को,
रहता एक डर,
लेकिन आवाज आती एक,
हाँ, तू सबर कर, तू सबर कर, तू सबर कर।

नहीं भूला रातों को
नहीं भूला बातों को
नहीं भूला दर्द को
नहीं भूला मर्म को
जो कहते एक ही बात
तू सबर कर

हाँ, तू सबर कर .....(3)

हाँ, रोज निकलता हूँ
बनने के लिए सोना
फिर भी अभी कम है मेहनत
बनने के लिए होना
मेरा काम मेरा धर्म,
न कि मेरी बातें,
पहले है कर्तव्य,
उसके बाद मुलाकातें,
अब कौनसी है बची
तुम्हारे पास खुराफातें,
मैने देखा डर में
तुमको शहर छोड़ जाते
कविता में हमारे गुरू
हैं जैसे दांते,
तुम हो एक कीड़े
जो एहसान भूल जाते,

कुछ बड़ा बनना बनने के लिए
चाहिए धीरज और जिगर
हाँ अंदर से आवाज आती
तू सबर कर ..... (3)

हाँ, मूर्ख हैं ये लोग
इनका काम है ये रोज का,
कर तू लगातार मेहनत
जैसे सिपाही फौज का
आँखों को तू काम दे
जैसे हमारी होश का
ध्यान कर तू लक्ष्य को
जैसे सन्यासी खोज का
ध्यान रख शुरूआत में,
किसने करी है कदर
हाँ तू सबर कर ..... (3) ।

.....

धरती की पुकार

मनस्वी शरणागत
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

मिट्टी की ये ललक देखिए।
कि धरती से फलक देखिए।
जुगनू तो सो गए होंगे।
आप आसमान की चमक देखिए।

गाँव तो शहर में बस गया।
अब बस सुनसान सड़क देखिए।

बरसात भी कब की चली गई।
धरती की अब आप सिसक देखिए।

गर्मी का मौसम आया है।
आम के दरख्त की अलक देखिए।

खूबसूरती बिखरी पड़ी है।
प्रकृति को अंत तक देखिए।

मेरा मन यह कहता है।
नदी के साथ कौन बहता है।
सब भार मुक्त हो जाते हैं।
अकेला समुंदर बोझ सहता है।

.....

"भारत की गरीबी"

साक्षी पटेल
बी.ए. तृतीय वर्ष

"गरीबी बहुत–ही सी अर्थिक परिस्थितियों का परिणाम है इसलिए गरीबी की समस्या को हल करने के लिए स्वयं गरीबी की संकल्पना से परे होना पड़ेगा ..... यह जानना काफी नहीं की कितने लोग गरीब हैं बल्कि यह जानना महत्वपूर्ण है कि गरीब लोग कितने गरीब हैं? भारत में गरीबी का जारी रहना एक बड़ी चुनौती है गंरीबी का

सम्बन्ध केवल आय या कैलोरी से जोड़कर करना सही नहीं होगा, बल्कि हमें यह देखना चाहिए कि लोगों की बीमारियों से कहाँ तक रक्षा हो पाई, है उनके लिए रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार की सुविधाओं का विस्तार करना होगा गरीबों को केवल सस्ती शिक्षा, सस्ता अनाज और सस्ती दवाईयाँ, सस्ता अवाज दे देने मात्र से उनकी गरीबी दूर नहीं होगी जिस प्रकार हम गरीब और गरीब रेखा पर सोच–विचार करते हैं, ठीक उसी प्रकार अमीर और अमीरी रेखा के निर्धारण पर भी सोचना हो। गरीबों के जीवन स्तर को जिन्दा रहने लायक स्तर से ऊपर उठाना होगा । "उन्हें केवल जीवनरेखा को पार करना ठीक वैसा ही होगा, जैसे गहरे पानी में डूबे हुए व्यक्ति को किनारे पर लाकर पटक देना"।

.....

क्या लिखूँ

रागिनी नापित
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कॉलेज की पत्रिका छप रही,
मुझे मिला समाचार।
सोचा कुछ लिख डालूँ,
आर्टिकल दो–चार।
क्या लिखूँ कैसे लिखूँ,
नहीं समझ कुछ आता।
यूँ ही बैठे–बैठे,
समय गुजर जाता।
कविता लिखूँ या कहानी,
अथवा कोई लेख।
यही सोचकर बैठा हूँ,
सिर घुटनों बैठा हूँ,
सिर घुटनों में टेक।
आशा है पढ़ लेंगे,

सभी छात्रगण इसको।
यही सोचकर होने लगी,
है प्रसन्नता मुझको।

.....

ऑनलाइन शिक्षा कोविड–19 के समय में रामबाण

सृष्टी कुमारी
बी.ए. प्रथम वर्ष

ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था वर्तमान समय में बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुई है, इसके बिना विद्यालय पहुँचे छात्र–छात्राओं को घर पर ही उचित एवं उपयोगी शिक्षा प्राप्त हो रही है। खासकर इस समय सुरक्षा की सृष्टी से यह वरदान ही साबित हुआ है। कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा एक विकल्प के तौर पर आया है जिससे भविष्य में भी बच्चों को लाभ मिलता रहेगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में नेटवर्क ने शिक्षण कार्य बाधित किया है। खासकर उस समय जब पाठ्य पुस्तकों का हल कोई देने वाला नहीं था। अब स्कूल खुल गए हैं पर कोरोना संक्रमण के भय से घरों पर ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव जारी है। छात्र को बेवजह यात्रा से बचना पड़ रहा है।

समय की तो बचत हो रही है साथ ही घर पर बैठकर बेहतर पढ़ाई भी कोरोना काल में होती रही है। हाँ, कुछ आँख की परेशानी बढ़ी है। गरीब छात्रों के लिए जरूर यह परेशानी देने वाला रहा कि ऑनलाइन कक्षा के लिए मोबाइल खरीदने में परेशानी हुई है।

.....

गायन वादन तथा नृत्यम् त्रयम् संगीत मुच्यते

रागिनी नापित
बी.ए. द्वितीय वर्ष

संगीत जीवन का आधार है, क्योंकि प्राचीन काल से आज तक हम यही देखते आए हैं कि संगीत हमारे हर भावात्मक पहलू को आधार प्रदान करता है जैसे किसी के जन्मोत्सव में बधाई संगीत, विवाह में वैवाहिक व महिला संगीत जीवन की अनंत खुशियों की व्यक्त करता हुआ सुगम एवं फिल्मी संगीत पारस्परिक प्रांत में अंतर दिखाता हुआ लोक संगीत हमारे जीवन में आस्था भक्ति का रस घोलने वाला भजन संगीत तथा हमारी भारतीय सभ्यता संपूर्ण विश्व पटल में परिभाषित करने वाला शास्त्रीय संगीत।

संगीत के बिना एक सभ्य सुदृढ़ समाज की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है। वैश्विक शांति व एकता अगर संगीत को ही कहा जाए तो यह स्वयं सिद्ध होगा क्योंकि पूरी दुनियाँ में जाति–पाति, धर्मभेद, भाषायें अनेक हो सकती है, किन्तु संगीत में सात स्वरों का स्वरूप एक है। संपूर्ण विश्व में संगीत को प्रस्तुत करने के तरीके अलग–अलग हो सकते हैं किन्तु उनके सुर और ताल का स्वरूप एक ही है।

संगीत शिक्षण में खास बात यह है कि संगीत को आधारभूत स्तर से सीखने का प्रयास करना चाहिए। जैसे सरगम, अलंकार, राग तथा नियत वाद्ययंत्रों से ज्ञान और उनकी साधना करनी चाहिए। संगीत वाद्यों के नियमित अभ्यास से संगीत में पूर्णतया को प्राप्त किया जा सकता है। सार रूप में कहा जा सकता है कि "जो रियाज करेगा वही राज करेगा"। आज के अभिभावकों की अपेक्षायें अपने बच्चों के प्रति कुछ ज्यादा ही होती हैं। वे अपने बच्चे में सभी चीजें एक साथ देखना चाहते हैं, परन्तु बच्चे की रूचि को अनदेखा किया जाता है। बच्चे को पढ़ाई के साथ उसकी रूचि के अनुसार ही उसे अन्य विधाओं में सीखने हेतु प्रेरित करना चाहिए।

.....

अहिन्दीभाषियों की कक्षाएं

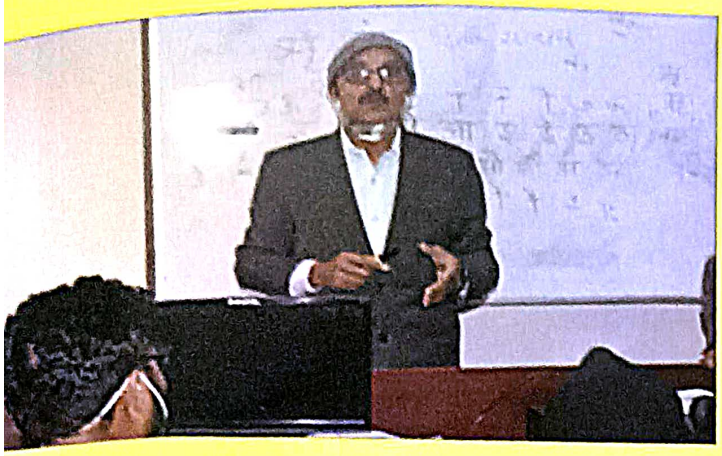

कार्यशाला

हिन्दी दिवस

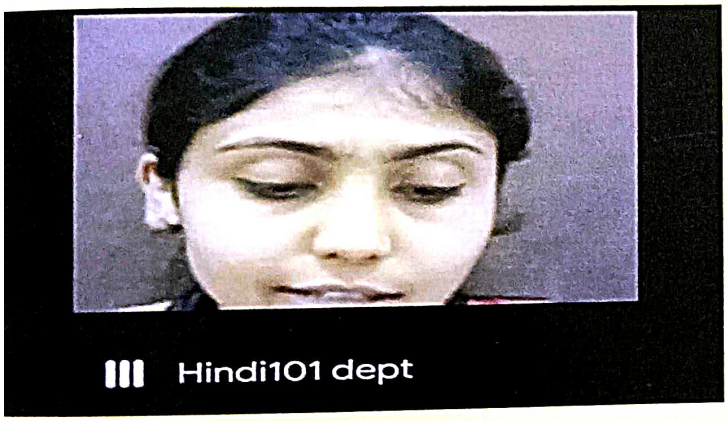

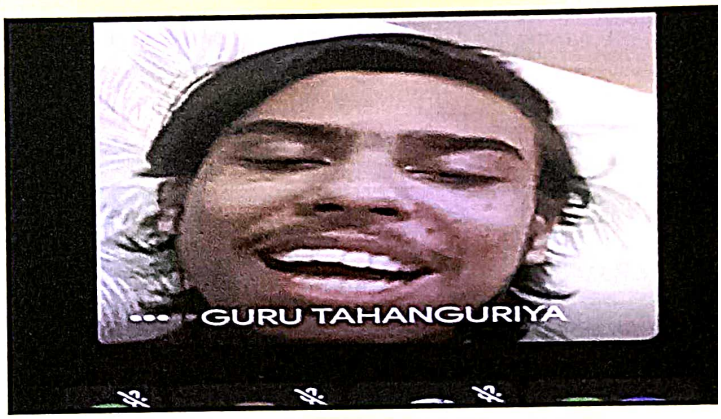

अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस

रविदास जयंती

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

अतिथि व्याख्यान

व्यावसायिक पाठ्यक्रम